बी.ए. खण्ड-प्रथम/हिन्दी (प्र०)/अध्ययन सामग्री
डॉ० संतोष कुमार, सहायक प्राचार्य, हिन्दी विभाग
भारती मंडन महाविद्यालय, रहिका, मधुबनी
दिनांक: 06.04.21

पत्र: द्वितीय/प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

विद्यापति की पदावली

विद्यापति हिन्दी, संस्कृत, मैथिली भाषा के विद्वान थे। इनके इन भाषाओं में अनेक ग्रंथ है। संस्कृत भाषा में भी उन्होंने एक दर्जन से अधिक पुस्तकों की रचना की। परन्तु उनको प्रसिद्धि 'पदावली' के कारण ही मिली। जो मिथिला के स्त्री-पुरुष के लोक-कंठ में बसा है।

इनकी पदावली गेय पदों का संग्रह है। इनके सभी पद छंद बद्ध और संगीत के सुर लय से बंधे है। इन्होंने काव्य में अपना आदर्श बंगाली भक्त कवि 'जयदेव' को मानते है। इसलिए इन्हें 'अभिनव जयदेव' कहा जाता है। ये जयदेव के समान ही छंदबद्ध, संगीत-पूर्ण, कोमल-कांत पदावली में श्रृंगारिक रचना करते है। इनके पदावली के सभी पद श्रृंगार से ओत-प्रोत है।

पदावली का रूप

इनके द्वारा रचित पदों की संख्या अभी-भी सही-सही ज्ञात नहीं है। श्री नगेन्द्र नाथ गुप्त ने 145 पदों का संग्रह प्रकाशित किया था। बाबू ब्रजनंदन सहाय ने भी गुप्त जी से अलग 84 पदों का संग्रह किया। जिसमें नचारियों की प्रधानता है।

समय संकलन और रख-रखाव के अभाव में उनके संपूर्ण पदों का प्रकाशन नहीं हो पाया। उनके अनेक अनूठे पद अप्रकाशित है। मिथिला की स्त्रियां विवाहादि जैसे शुभ कार्यों में आज भी उनके पद को गाती है।

हस्तलिखित पोथियाँ

पदावली संग्रह के क्रम में लोगों के द्वारा गाये पदों का संग्रह किया गया। साथ ही अनेक 'तरौनी' 'तालपत्र' का खोज कर उसपर से पदावली का संग्रह किया गया। जो सबसे प्राचीन और अधिक प्रमाणिक है। यह तालपत्र कम-से-कम 300 वर्ष प्राचीन है। बहुत सारे पत्र गायब है तो बहुत सारे जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। दूसरा पोथी 'नेपाली तालपत्र' में पायी गयी है।

इस 'नेपाली तालपत्र' में संकलित पदों की संख्या 600 है।
तीसरी पोथी 'रागतरंगिणी' है। इसमें लोचन ने बहुत सारे पद रखे हैं। लोचन ने ही ~~सर्वप्रथम~~ लिखा है — "अपभ्रंश भाषा की रचना प्रथम - प्रथम विद्यापति ने ही की।"

पदावली की भाषा

पदावली की भाषा अबतक विवादग्रस्त रही है। बंगाली लोग इनको बंगला का प्रथम कवि या बंगभाषा का प्रवर्तक मानते हैं। परन्तु इनकी भाषा मैथिली है, जो ब्रजबोली (या हिन्दी) की एक शाखा (उपभाषा) है। अतः इन्हें मैथिली का प्रथम कवि माना जाता है। देखा जाए तो देश-काल के प्रभाव के कारण वर्तमान मैथिली से पदावली की भाषा कुछ भिन्न है।

पदावली की विशेषताएँ

विद्यापति के पदावली की सबसे बड़ी विशेषता है उसकी गेयता। जिसके कारण वह जनमानस के हृदय में रच-बस गया। विद्यापति ने ऐसे पदों की रचना की जो महल से झोपड़ियों तक समान रूप से आदर पाता आ रहा है। इनके पद भक्त, नववधू, नवयुवक और वृद्धों अर्थात समाज के सभी वर्गों में काफी लोक प्रिय है। इन्होंने उपर्युक्त सभी भावों के पदों की रचना की है। जिसमें हर उम्र के और हर स्थिति - परिस्थिति के लोगों की भावनाओं का सम्मान है। भक्त जब इनके गीत को गाते हैं —— 'कखन हरब दुख मोर हे — भोलेनाथ'। वे गाते - गाते भाव विभोर हो जाते हैं। इसी प्रकार कोहबर में गाये जाने वाली गीत — सुन्दर चललि पहु घर ना, जाइतहि लागु परम डर ना' नव-वधुओं के हृदय में आनंद के स्रोत उत्पन्न कर देते ही वही नवयुवक 'ससन परस खसु अंबर रे, देखल धनि देह' गायक मधुर कल्पना से रोमांचित हो जाते हैं तो वृद्ध 'तातल सैकत वारिबिन्दु सम सुत-मित रमनि समाज, तोहे बिसरि मन ताहि समरपिल अब मझु होब कोन काज। माधव, हम परिनाम निरासा।' गाता हुआ नयनों से अश्रु-बिंदु गिराने लगता है।

राधाकृष्ण की लीलाओं का वर्णन अत्यंत मधुर, रमणीय और मार्मिक है। जिनमें इन्होंने अनूठे और नवीन उपमाओं का प्रयोग किया है। प्रकृति वर्णन में भी इन्होंने कमाल कर दिया है - इनका वसंत और पावस का या बारहमासा का वर्णन अद्भुत है। इनके द्वारा रचित मिलन और विरह का वर्णन राधाकृष्ण के हृदय का सूक्ष्म विश्लेषण है। विरह वर्णन राधा (प्रेमिका) की हृदय की तस्वीर - सखी को जीतें श्रीकृष्ण (प्रियतम) के प्रति तल्लीनता, लगाव, प्रेम, व्याकुलता, वेदना आदि का भाव - भरा पड़ा है।